आचार्य राजशेखरकृत काव्यमीमांसा

का

आलोचनात्मक अध्ययन

A CRITICAL STUDY OF ACHARYA RAJSHEKHAR'S
KAVYAMIMANSA

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी०फिल० (संस्कृत) उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

शोधकर्त्री

श्रीमती किरण श्रीवास्तव

निर्देशिका

डा० ज्ञान देवी श्रीवास्तव
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

1998

निवेदन

आचार्य राजशेखर की 'काव्यमीमांसा' काव्यविद्या के गम्भीर विषयों की विवेचिका है। अत: 'गागर में सागर' इस उक्ति को चरितार्थ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आचार्य भामह से लेकर आचार्य आनन्दवर्धन तक की काव्यशास्त्रीय विचारधाराओं से आचार्य राजशेखर लाभान्वित हुए थे, संस्कृत वाङ्मय की सभी शाखाओं पर सूक्ष्म तथा वैज्ञानिक विवेचना की परम्परा उनके समक्ष उपस्थित थी। ऐसे समय में सभी विचारधाराओं का अपने प्रतिभा के प्रभाव से समन्वय करते हुए उन्होंने काव्यशास्त्र के विभिन्न विषयों की सूक्ष्म विवेचनाओं हेतु अनेक मौलिक उद्भावनाओं सहित 'काव्यमीमांसा' की रचना की। यह ग्रन्थ काव्यविद्या के शिष्यों के हित के लिए रचित है। विविध तथ्यों की सारविवेचना करने वाली 'काव्यमीमांसा' की सूत्रशैली के कारण ही उसके 'कविरहस्य' नामक प्रथम अधिकरण में ही कविशिक्षा से सम्बद्ध प्राय: सभी विषयों का अन्तर्भाव दृष्टिगत होता है। इस ग्रन्थ का नामकरण भी इसको मीमांसाग्रन्थों के समान ही महत्व प्रदान करता हुआ प्रतीत होता है। काव्य तथा साहित्यविद्या का विविध तर्कों से युक्त सारगर्भित सूक्ष्म विवेचन काव्यविद्या के अधिकारी शिष्यों को इन विषयों का पूर्ण ज्ञान प्रदान करता है। जिस प्रकार दार्शनिक ग्रन्थों में वर्णित ब्रह्म और माया का सम्यक् ज्ञान मोक्ष का साधन बनकर दार्शनिकों के ध्येय की पराकाष्ठा बनता है, उसी प्रकार काव्यपुरुष तथा साहित्यविद्या के सम्यक् ज्ञान को आचार्य राजशेखर ने ऐहलौकिक सुख का ही नहीं, परमपुरुषार्थ मोक्ष का भी साधन बताया है।

काव्य तथा उससे सम्बद्ध विद्याओं को सम्मान की पराकाष्ठा तक पहुँचाने वाले, काव्यविद्या के जिज्ञासु शिष्यों के लिए काव्यनिर्माण के ज्ञान के असंख्य द्वारों के उद्घाटनकर्ता तथा अपने ही मौलिक विषयों के आलोक से स्वत: आलोकित ग्रन्थ की समालोचना हेतु शोधप्रबन्ध प्रस्तुत करने का कार्य इस प्रकार का है जैसे प्रबल झञ्झावात में आबद्ध कोई दुस्साहसी दीपक अपने न्यूनतम टिमटिमाते प्रकाश से सूर्य और चन्द्र के मार्ग को प्रकाशित करने का दम्भ भरे, तथापि इस ग्रन्थ को अन्य काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों से

पृथक् करती हुई इसकी वैषयिक विलक्षणता द्वारा प्रेरणा प्राप्त कर मैं अपनी अल्पज्ञता से बाधित हुए बिना इस पर शोध प्रबन्ध की रचना हेतु साहस करने को तत्पर हुई।

वर्ष 1967-68 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृतविभाग की स्नातकोत्तर कक्षाओं में जिन्होंने अमूल्य विद्यादान देकर मुझे मेरे जीवनपर्यन्त गौरवान्वित किया, उन समस्त श्रद्धेय गुरूजनों के चरणों में अपने श्रद्धासुमन समर्पित करती हूँ। अपने स्नेह और आशीर्वाद के अमिट प्रभाव से वे निरन्तर मेरी अक्षय प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। जीवन में उच्च पद की दौड़ में अपना नामाङ्कन न कराकर भी मैं उन समस्त गुरूजनों की शिक्षा के प्रकाश से 30 वर्षों बाद भी अपने अन्तर्मन को प्रकाशित सा अनुभव करती हूँ। उन सभी की अप्रत्यक्ष प्रेरणा तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शोधकार्य करने की अदम्य लालसा ने मुझे स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के दीर्घकालीन अन्तराल के पश्चात् इसी विश्वविद्यालय की छत्रछाया में शोधप्रबन्ध की प्रस्तुति हेतु उपस्थित होने को बाध्य किया। उन समस्त श्रद्धेय गुरुजनों के प्रति कृतज्ञताज्ञापन में शब्द सदैव अक्षम ही रहेंगे। उनके सम्मान में मेरा अशाब्दिक नमन।

शोधप्रबन्ध के निर्देशन हेतु मुझे परमश्रद्धेया डा० ज्ञान देवी श्रीवास्तव (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) का सानिध्य प्राप्त हुआ। उनकी विद्वता के प्रति मैं नतमस्तक हूँ। मेरे लिए जो कार्य परिस्थितियों के झञ्झावातों को झेलते हुए कठिन बन चुका था, उसको प्रारम्भ करने की प्रेरणा मुझे बड़ी बहन का सा स्नेह देने वाली डा० ज्ञानदेवी से ही मिली। उन्होंने सदैव सहज आत्मीयता से अपना व्यस्ततम अमूल्य समय मुझे देते हुए मेरा मार्गनिर्देशन किया। यदि प्रस्तुत शोधप्रबन्ध की किञ्चित् उपयोगिता हो तो उसका श्रेय उन्हें ही है। शोधकार्य को प्रारम्भ करने में मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के रीडर, मेरे अनुज समान डा० कौशल की प्रेरणा से उत्साहित हुई। उनके प्रति मेरी कृतज्ञता असीम है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि के महत्व को अस्वीकार करना कदापि संभव नहीं है। मेरे परमपूज्य माता-पिता तथा स्नेही अनुज मेरा मानसिक सम्बल बने, प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में

महारथी मेरे पति का मुझे निरन्तर उत्साहवर्धक सहयोग मिला तो मेरे कर्मठ बेटे ने भी अपने उत्साही स्वभाव से प्रतिपल मेरी मानसिक शक्ति की अभिवृद्धि करते हुए शोध-प्रबन्ध के टङ्कणकार्य को अपने श्रम से सम्पन्न कराया। शोध प्रबन्ध के टङ्कणकार्य को पूर्ण रुचि तथा श्रमसहित सम्पन्न करने में '**लकी बद्रर्स**' 1, कटरा, इलाहाबाद के सराहनीय योगदान हेतु मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। सभी के सहयोग का अक्षयस्त्रोत मुझे प्रेरणा देता रहा।

अन्ततः अपने ज्ञान की अतिसङ्कुचित सीमा रेखा में आबद्ध मैं अपनी अल्पज्ञता के कारण होने वाली अशुद्धियों के लिए विद्वत्जनों की क्षमाप्राप्ति हेतु आशान्वित हूँ।

दिनाङ्क
12-6-98

किरण श्रीवास्तव
किरण श्रीवास्तव

विषयानुक्रम

पृष्ठ

प्रथम अध्याय 1 - 24

प्रस्तावना (काव्यमीमांसा की महत्ता) **आचार्य राजशेखर का व्यक्तित्व और कृतित्व :-** काल (अन्त:साक्ष्यों तथा बहि:साक्ष्यों का आधार), जन्मस्थान एवं वंश, कुल परम्परा, व्यक्तित्व, विदुषी पत्नी, कर्मभूमि-कन्नौज, रचनाएँ।

द्वितीय अध्याय 25-63

काव्यमीमांसा के विविध रोचक प्रसङ्ग

(क) आचार्य राजशेखर का काव्य पुरूष

(ख) काव्य एवम् साहित्य

(ग) रीति, वृत्ति एवं प्रवृत्ति

(घ) काकु एवं काव्यपाठ।

तृतीय अध्याय 64 - 140

'काव्यमीमांसा' में काव्यहेतु तथा कविशिक्षा

शक्ति एवम् प्रतिभा, प्रतिभा से सम्बद्ध कविभेद, व्युत्पत्ति, कविशिक्षा एवम् अभ्यास, कवि की शिष्यावस्था, विभिन्न शिष्यों का कविस्वरूप, शिष्य का कवि बनने का विकासक्रम-कवि की अवस्थाएँ, कविभेद तथा कवियों के गुण, अभ्यास के उपाय, काव्यपाक, कवियों का काव्यरचनाकाल, दिनचर्या, स्वभाव, स्वास्थ्य, स्वच्छता, परिचारकगण, सम्बन्धी तथा मित्र, सहायक

लेखक, लेखनसामग्री, आवास। विभिन्न प्रकीर्ण कविशिक्षाएँ। शिक्षा सम्बन्धी विषयों के विस्तार का कारण तथा औचित्य।

चतुर्थ अध्याय 141 - 186

कवि समय

कविसमय का सम्बन्ध शब्दों से, अर्थों से अथवा दोनों से? राजशेखर द्वारा स्वीकृत परिभाषा का तात्पर्य, कविसमय के वैशिष्ट्य-परम्परित रूप, अशास्त्रीयत्व तथा अलौकिकत्व, कविसमय में निहित सौन्दर्य भावना, कविसमय का महत्व, काव्यशास्त्र में कविसमय के विवेचन का इतिहास, विभिन्न कविसमय, विभिन्न महाकाव्यों में कविसमय का प्रयोग।

पञ्चम अध्याय 187-242

काव्य में हरण-औचित्य तथा आवश्यकता

राजशेखर के हरणविवेचन का मूल एवं हरणविवेचक पश्चाद्वर्ती आचार्य, हरण के औचित्य के सम्बन्ध में राजशेखर का अवन्तिसुन्दरी के मत से विरोध, शब्दहरण के प्रकार तथा उनकी उपादेयता, अर्थहरण विवेचन, काव्यनिर्माण में परप्रबन्धानुशीलन की अपेक्षा, आनन्दवर्धन का अर्थसाम्य— अर्थहरण विवेचन का आधार? अर्थहरण के भेद, अर्थहरण के विभिन्न अवान्तर भेदों का परस्पर तुलनीय स्वरूप, हरणकर्ता कवियों के भेद, मौलिकता।

षष्ठ अध्याय 243-271

(क) **'काव्यमीमांसा में वर्णित कवि तथा भावक**

कविविवेचन, काव्यपरीक्षक भावक विवेचन, भावक प्रकार।

(ख) **'काव्यमीमांसा' में वर्णित विदग्धगोष्ठी तथा राजचर्या**

विदग्धगोष्ठी विवेचन, राजचर्या विवेचन।

सप्तम अध्याय 272-319

काव्यमीमांसा में देश तथा कालविवेचन

देशविभाग :- लोकविभाग, समुद्र, जम्बूदीप-उसके पर्वत तथा देश, भारतवर्ष, चक्रवर्तिक्षेत्र, कुमारीद्वीप के सात कुलपर्वत, आर्यावर्त, सम्पूर्ण भारत के पाँच विभाग— पूर्वदेश, दक्षिणापथ, पश्चिमदेश, उत्तरापथ, मध्यदेश, दिशाओं की संख्या, विभिन्न दिशाओं के लोगों के वर्ण।

कालविवेचन :- कालगणना, सम्पूर्ण वर्ष में दिन-रात का बढ़ना, सौरमान, पितृमासमान तथा चान्द्रमास; चान्द्रमास से सम्बद्ध संवत्सर तथा ऋतुचक्र, विभिन्न ऋतुओं की वायु का दिशानिर्देश, ऋतुचक्र:- 'काव्यमीमांसा' तथा 'ऋतुसंहार' में वर्णित वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म ऋतु वर्णन। ऋतु की अवस्थाएँ, पुष्पों की उपयोगिता, वृक्ष तथा लताओं के फूलों, फलों में समयान्तर, फूलों के प्रकार।

अष्टम अध्याय 320 - 325

उपसंहार

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची 326 - 332

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

('काव्यमीमांसा' की महत्ता)

आचार्य राजशेखर को आचार्यत्व की प्रतिष्ठा उनके संस्कृत और प्राकृत नाटकों के साथ-साथ उनके महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'काव्यमीमांसा' के द्वारा प्राप्त हुई। यह ग्रन्थ वह सागर है जो संस्कृत काव्यशास्त्रीय जगत् के अमूल्य विषयों को रत्न रूप में अपने अन्दर समाहित किए हुए है। काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों से तो संस्कृत साहित्यजगत् आचार्य राजशेखर से पूर्व भी परिचित था। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में ईस्वी सदी के पूर्व से काव्यशास्त्र के जिस स्पष्ट वैज्ञानिक स्वरूप का प्रारम्भ हुआ—उसकी परम्परा भरतमुनि के पश्चात् विभिन्न काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों से निरन्तर चलती रही। काव्यशास्त्र पर विभिन्न आचार्यों ने ग्रन्थ रचना की। इस परम्परा के उल्लेखनीय आचार्य मेधावी, रूद्र, भट्टि, काव्यकार, भामह, दण्डी, उद्भट, वामन, रुद्रट, आनन्दवर्धन, राजशेखर, भट्टनायक, शङ्कुक, कुन्तक, अभिनवगुप्त, धनञ्जय, महिमभट्ट, भोज, रामचन्द्र, शारदातनय, क्षेमेन्द्र, मम्मट, रुय्यक, वाग्भट, हेमचन्द्र, जयदेव, विद्याधर, विद्यानाथ, विश्वनाथ, भानुदत्त, रूपगोस्वामी, केशवमिश्र, विश्वेश्वर, अप्पयदीक्षित, जगन्नाथ और नागेशभट्ट आदि हैं।

विक्रम संवत्सर की नवम, दशम और एकादश शताब्दियों में काश्मीर के राजाओं के समय में आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, क्षेमेन्द्र, मम्मट आदि ने तथा कन्नौज के राजाओं यशोवर्मा, महेन्द्रपाल, महीपाल आदि के समय में वाक्पतिराज, भवभूति और राजशेखर आदि ने अपनी अमूल्य रचनाओं से संस्कृतसाहित्यनिधि की अभिवृद्धि में सहायता की। आचार्य राजशेखर को आचार्य भामह से लेकर आचार्य आनन्दवर्धन तक की विकसित काव्यशास्त्रीय परम्परा उपलब्ध थी। संस्कृत वाङ्मय की विभिन्न शाखाओं पर सूक्ष्म रूप से पर्याप्त तथा विस्तृत विवेचन, समीक्षण तथा परीक्षण किया गया था। साहित्यक्षेत्र में विद्वानों ने रस, अलङ्कार, ध्वनि तथा रीति विषयों पर सूक्ष्मतम तथा गम्भीरतम मीमांसाएँ प्रस्तुत की थीं। ऐसे समय में आचार्य राजशेखर ने साहित्यक्षेत्र में अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया। पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध काव्यशास्त्रीय सामग्री के गहन अध्ययन तथा स्वमौलिक उद्भावनाओं द्वारा वह नवीन कवियों का महान् उपकार करते हुए उनके शिक्षक के रूप में 'काव्यमीमांसा' द्वारा हमारे समक्ष

उपस्थित हुए। इस प्रकार उन्होंने काव्यशास्त्रीय परम्परा को एक नवीन आयाम भी दिया तथा काव्यशास्त्र को अत्यधिक समृद्ध बनाया। काव्यविद्या के जिज्ञासु कवियों के लिए 'काव्यमीमांसा' की रचना की गई थी। काव्यरचना की व्यावहारिक शिक्षा सर्वप्रथम आचार्य राजशेखर ने ही प्रदान की, इसी कारण उनकी 'काव्यमीमांसा' उनको 'कविशिक्षा' के युग का प्रवर्तक सिद्ध करती है। 'काव्यमीमांसा' से कवियों की वह आचारसंहिता उपलब्ध होती है, जिसका स्वरूप बहुत विशद तथा व्यापक है।

'काव्यमीमांसा' में कवि को शिक्षा देने के लिए काव्यपुरुष, कवि, भावक, काव्यपाक, काव्यहरण तथा कविसमय आदि कवि के उपकारक विषय अन्तर्निहित हैं। कविचर्या के रूप में कवि के लिए आवश्यक विषयों का उल्लेख किया गया है, कवि के रहन-सहन तथा उसके दैनिक जीवन की अन्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। तत्कालीन राजपरिवार भी कवियों एवम् विद्वानों को विशेष सम्मान प्रदान करते थे। यह सौभाग्य आचार्य राजशेखर को भी प्राप्त था। वे गुर्जरप्रतिहारवंशी शासक महेन्द्रपाल के राजगुरू थे। महेन्द्रपाल के पिता मिहिरभोज तथा पुत्र महीपाल का भी शासनकाल उन्होंने देखा था, उस प्रकार वे लम्बे समय तक राजपरिवारों से सम्बद्ध थे। इसी कारण 'काव्यमीमांसा' के 'कविचर्या' तथा 'राजचर्या' नामक प्रसङ्ग काव्य तथा शास्त्र में राजाओं की रूचि तथा उनके द्वारा किए गए कवियों के सम्मान के परिचायक कहे जा सकते हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य राजशेखर काव्य तथा काव्यशास्त्र दोनों की रचना में परम प्रवीण थे। 'काव्यमीमांसा' के द्वारा उनका काव्यशास्त्र, भूगोलवेत्ता एवम् कविशिक्षक आचार्य का बहुरङ्गी व्यक्तित्व हमारे समक्ष उपस्थित हुआ है। वे विभिन्न शास्त्रों के ज्ञाता थे। 'काव्यमीमांसा' के कविरहस्य का षष्ठ अधिकरण व्याकरण शास्त्र से सम्बद्ध है। इसी ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर वायुपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, मनुस्मृति, कौटिलीय अर्थशास्त्र, वात्स्यायन के कामसूत्र आदि ग्रन्थों का आधार ग्रहण किया गया है। काव्यशास्त्र के गहन तथा व्यापक अध्ययन के कारण ही आचार्य राजशेखर ने 'काव्यमीमांसा' में विभिन्न आचार्यों के विचारों का उल्लेख किया है। 'काव्यमीमांसा' का देश विवेचन आचार्य राजशेखर के भूगोल के ज्ञान से परिचित कराता है, तो उनका कालविवेचन उनके सूक्ष्म प्रकृति-निरीक्षण की झलक दिखलाता है।

आचार्य राजशेखर ने 'कविशिक्षा' को गम्भीर विषय के रूप में प्रस्तुत किया है और इसी क्रम में काव्यशास्त्र के अन्य विषयों का भी विवेचन किया है। इस दृष्टि से 'काव्यमीमांसा' को साहित्यशास्त्र के